IJAER/January-February 2013/Volume-2/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Researc

नेमीचंद जैन के काव्य में संस्कार और विवेक

दामोदर लाल मीना

व्याख्याता हिन्दी राजकीय महाविद्यालय

गंगापुर सिटी राजस्थान

सार

नेमि जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। कम्युनिस्ट पार्टी से लेकर इप्टा आंदोलन में सक्रिय रहे नेमि जी कवि, आलोचक रंग चिंतक संपादक नाटक कार और अनुवादक भी। साहित्य की हर विधा में योगदान दिया। 8 खण्डों में छपी उनकी रचनावली। हिंदी साहित्य में रचनावलियों की भीड़ में मुक्तिबोध की रचनावली सबसे अलग है क्योंकि वह अपनी बेहतर प्रस्तुति और सामग्री संचयन की दृष्टि से हमेशा याद की जाती है। इसका संपादन मुक्तिबोध के मित्र एवं तार सप्तक के मूर्धन्य कवि नेमिचन्द्र जैन ने 1980 में किया था। आज उसी नेमि जी की रचनावली का लोकार्पण हो रहा है। मुक्तिबोध की रचनावली मुक्तिबोध के निधन के करीब 12 साल बाद निकल पाई थी।

नेमि जी की रचनावली उनके निधन के 16 साल बाद आ रही है जिसका संपादन नंद किशोर आचार्य और ज्योतिष जोशी ने किया है। वैसे भी हिंदी के लेखकों को यह सौभाग्य कहाँ मिल पाता कि वे अपनी रचनावली जीते जी देख पाएं। नेमि जी पहले कवि के रूप में, फिर हिंदी उपन्यासों के आलोचक के रूप में जाने गए। लेकिन जब से उन्होंने रंग मंच साहित्य में दिलचस्पी ली वे देखते–देखते हिंदी रंग आलोचना के शिखर पुरुष के रूप में समादृत हुए।

वे नटरंग पत्रिका के संपादक संग्रहकर्ता और रंग सहित्य संग्रहालय निर्माता के रूप में भी जाने गए पर वे मुक्तिबोध के गहरे मित्र के रूप में भी याद किये जाते हैं। उनकी वजह से ही मुक्तिबोध का समग्र साहित्य हमारे सामने आया और उनके अवदान से हिंदी साहित्य परिचित हुआ। नेमि रचनावली के आने से भी हम उनके समग्र योगदान से परिचित होंगे,ऐसा विश्वास है। ज्योतिष जोशी के अनुसार 8 खण्डों में करीब 37500 पृष्ठों में यह रचनावली फैली है। इसमें पहली बार उनकी कुछ कहानियां कुछ नाटक रेडियो नाटक और पन्द्रह बीस लेख भी पाठकों को पढ़ने को मिलेंगे। ये सब अब तक अप्रकाशित थे। इसमें उनका अंग्रेजी लेखन शामिल नहीं।

उनके अंग्रेजी में लिखे गए लेखों समीक्षाओं के भी दो खण्ड आएंगे। उन्होंने 60 के दशक में स्ट्समैन, टाइम्स अ□फ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स में नाटकों की नियमित समीक्षा की। इस दृष्टि से वे हिंदी के पहले लेखक हैं। उनका विपुल लेखन शोधार्थियों के लिए आधार समग्र बन गया है। आजादी के बाद हिंदी रंगमंच को नेमि जी के बिना समझा नहीं जा सकता।

भूमिका

नेमिचन्द्र जैन के आलोचना–कर्म का एक बड़ा हिस्सा कथा–साहित्य की आलोचना का है। यह कार्य उन्होंने मुख्य रूप से अधूरे साक्षात्कार और जनान्तिक जैसी पुस्तकों के माध्यम से किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने विपुल मात्रा में पत्र–पत्रिकाओं में लिखकर कथा–साहित्य की आलोचना को निरन्तर समृद्ध किया।

इसमें स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण उपन्यास शामिल हैं जिनका विस्तार से विवेचन–विश्लेषण है। इनमें उसका बचपन, नदी के द्वीप, मैला आँचल, यह पथ बन्धु था, बूँद और समुद्र, झूठा सच, भूले बिसरे चित्रा, जयवर्द्धन, चारु चन्द्रलेख, राग दरबारी, गाँठ, हत्या, जुगलबन्दी, चिड़िया घर, टोपी शुक्ला, सूरजमुखी अँधेरे के, वह अपना चेहरा, अमिता, कब तक पुकारूँ, बावन पत्ते, और गोबर गणेश, आदि तो हैं ही, छोटे–बड़े अन्य शताधिक उपन्यास हैं जिनके माध्यम से नेमिचन्द्र जैन ने हिन्दी के समग्र औपन्यासिक परिदृश्य को उसकी ख़ ूबियों और ख़ ामियों के साथ उपस्थित किया है।

नाट्य प्रस्तुतियों की समीक्षा से सम्बन्धित सामग्री नेमिचन्द्र जैन की बहुचर्चित पुस्तक तीसरा पाठ से सम्बन्धित है जिसमें 1957 से लेकर 1991 तक यानी लगभग चालीस वर्षों की भारतीय, विशेषकर हिन्दी रंगमंच से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतियों की सांगोपांग समीक्षाएँ हैं। इन समीक्षाओं में अन्धायुग, आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे–अधूरे, कोमल गान्धार, हानूश, स्कन्दगुप्त, जैसे हिन्दी के श्रेष्ठतम नाटकों की प्रस्तुतियों के साथ–साथ तुगलक, हयवदन, सखाराम बाइंडर, कन्यादान, उध्वस्त धर्मशाला जैसी चर्चित भारतीय नाट्य–प्रस्तुतियों और आथेलो, हेमलेट, मैकबेथ, ईडिपस आदि विदेशी प्रस्तुतियों की विशद् समीक्षाएँ शामिल हैं। इस समीक्षा खण्ड में अनेक नाट्य समारोहों का भी विवेचन है, तो प्रस्तुति की चर्चा के बहाने अनेक रंगमंचीय प्रश्नों पर गहरा विचार–विमर्श भी।

कविताओं से गुजरते हुए पाठक देख सकेंगे कि छायावाद के बाद हिन्दी कविता का अगला चरण अपने यथार्थ में कितना द्वन्द्वात्मक है और निज के जीवन के साथ समाज और व्यवस्था के स्तर पर कितना कठिन संघर्ष है तो कितना कठिन उन सपनों को जीना है जो स्वतन्त्रता–पूर्व दिखे और बाद में छिन्न–भिन्न होते चले गये।

कह सकते हैं कि सत्तर–पचहत्तर वर्षों की इस काव्य–यात्रा में हिन्दी कविता के विकास, द्वैत तथा संघर्ष को अनेक रूपों में देखा–समझा जा सकता है जो भूमिकाओं से लेकर काव्य–वस्तु में संकेतित हैं। यद्यपि मूलतः कवि होने के बावजूद नेमिचन्द्र जैन ने कविताएँ कम लिखीं पर जो लिखीं उनमें एक बड़ा संसार खुलता है।

इनका विन्यास प्रयोगशील है और इनकी संवेदना विराट को छूती है। इस दीर्घ अवधि में बढ़ती हुई यह यात्रा व्यक्ति– समाज, भावना, बुद्धि आदर्श–यथार्थ तथा प्रत्यक्ष–परोक्ष सत्ता पर गहरे विमर्श के साथ जो प्रश्नाकुल परिवेश रचती है, उससे हिन्दी कविता समृद्ध होती है। यह कविता निरे तर्क और वक्तव्यों की कविता नहीं है, जीवन के गहरे क्षणों से साक्षात्कार की कविता है, इसलिए इसमें चिन्तनशीलता है और मन को उद्वेलित करनेवाली दृष्टि भी।

नेमिचंद्र जैन ने परंपरा को आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है और नए सत्य का उद्‌घाटन किया है। वे हमेशा ऐसी नवीनता की तलाश में रहे जो मनुष्य में नैतिकता का बोध लाती है। वे एक तरीके से निसंग आलोचक थे। हिंदी आलोचना ने उनके साहित्य–चिंतन और व्यावहारिक आलोचना पर ठीक तरह से ध्यान नहीं दिया है। और ये उनकी प्रतिभा की अनदेखी है। उनकी कविताओं को लेकर और काम किए जाने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी रश्मि वाजपेयी ने उनके पूरे जीवन को याद करते हुए उनकी उदारता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि वे एक पति और एक पिता के रूप में स्त्रियों की स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे।

उन्होंने विवाह के बाद न केवल अपनी पत्नी को शिक्षित किया बल्कि विभिन्न कला माध्यमों में कार्य करने की छूट भी दी। किया। उन्होंने युवाओं में विशेष रुचि का जिक्र करते हुए कहा कि वे सांस्कृतिक समझ को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना चाहते थे। नेमिचंद्र जैन सभी अर्थों में विरले व्यक्ति थे। हिंदी साहित्य के सभी क्षेत्रों में उनका काम स्मरणीय रहेगा।

एक आलोचक के रूप में वे सभ्यता समीक्षक हैं जो संस्कृति का कोई भी पहलू अनछुआ नहीं छोड़ते हैं। वे भारतीय रंगकर्म को अभिनय केंद्रित बनाना चाहते थे जो कि मुख्यता निर्देशक केन्द्रित है। उन्होंने हिंदी

आलोचकों पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने नेमिचंद्र जैन के साथ बेहद संकीर्णता दिखाई है। आगे उन्होंने कहा कि नेमिचंद्र जैन की कविता को सतर्कता के साथ देखने की जरूरत है। उन्होंने कहानी, उपन्यास की समीक्षा के प्रतिमानीकरण का बड़ा काम किया था। उनके कार्यों की विवेचना करना बहुत जरूरी है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में माधव कौशिक ने कहा साहित्यिक संकीर्णता के चलते हमने नेमिचंद्र का मूल्यांकन उचित तरीके से नहीं किया है जिसकी आज बेहद जरूरत है।

हिंदी रंगमंच के विकास में वे हिंदी प्रदेश की सामंतवादी सोच को जिम्मेदार ठहराते थे। उनका मानना था कि रंगमंच कोई शास्त्रीय विधा नहीं है जिसमें कि बदलाव न किए जा सके। रंगमंच को निरंतर अपने दर्शकों के साथ संवाद करते रहना चाहिए। नेमिचंद्र जैन नाट्य आलोचकों से यह उम्मीद कर रहे थे कि वे नाटक के जरूरी और गैर जरूरी तत्त्वों की तरफ गंभीरता से ध्यान दें।

वे सांस्कृतिक विमर्श का राजनीति से प्रेरित हो जाने पर चिंतित थे। वे इस बात पर विश्वास करते थे कि नाटक केवल डिजाइन नहीं बल्कि सभी कलाओं का मिश्रण हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नेमिचंद्र जैन ने ही नाट्य आलोचना की सहज भाषा को तैयार किया। वे हिंदी रंगमंच की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना चाहते थे।

नेमीचंद जैन के काव्य में संस्कार और विवेक

नेमिचंद्र जैन ने युवा रंगकर्मियों को वह विवेक दिया जिससे वे नाटकों की विभिन्न शैलियों को देख और परख सके। सत्र के अध्यक्ष देवेंद्रराज अंकुर ने कहा कि नाट्य आलोचना की स्थिति अभी भी बहुत गंभीर है और उसे जांचने परखने के लिए हम अभी भी कोई समग्र दृष्टि विकसित नहीं कर पाए हैं। उन्होंने ने कहा कि नेमिचंद्र जैन हमेशा इस बात पर जोर देते कि नाटक की समीक्षा में केवल किसी एक पक्ष की श्रेष्ठता का आकलन नहीं होना चाहिए, बल्कि सभी क्षेत्रों को सम्यक दृष्टि से देखना चाहिए उनका एकांत पलायनवादी एकांत नहीं था बल्कि उसमें निज के साथ समाज को देखने की दृष्टि थी। नेमिचंद्र जैन की आंतरिकता ही उनका वैशिष्ट्य है। नेमिचंद्र जैन का कवि संकोची और काव्य–संयम का अद्भुत मिश्रण है। ध्रुव शुक्ल ने उनकी कविता के बारे में कहा कि कविता में उनकी सादगी अलग से पहचानी जा सकती है। वे अपने समकालीन कवियों से प्रेरणा लेते हुए उनके साथ खड़े दिखते है और सहचर और सहधर्मी की एक नई मिसाल प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कविता में अहम का विलयन और उसका सामाजीकरण बहुत संतुलित रूप में किया। हमें उनकी कविता को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने की जरूरत है।

नेमिचंद्र जैन अपनी पुस्तक अधूरे साक्षात्कार में आलोचक का सच्चा धर्म निभाते हुए कभी भी किसी उपन्यासकार या उपन्यास से अभिभूत नहीं होते बल्कि उसकी आलोचना समग्र रूप से करते हैं। वह उपन्यास को परखने के लिए प्रामाणिकता, सूक्ष्मता और गहराई का जो सूत्र देते हैं वह आज भी कालजयी है।

सत्यदेव त्रिपाठी ने कहा कि इनकी आलोचना की यह विशिष्टता है कि वह कथा समीक्षा में अपने नाटक के समीक्षक को नहीं आने देते हैं। वे हमेशा कृति के माध्यम से समीक्षा करते हैं और मैला आंचल की समीक्षा में यह उद्घाटित करते हैं कि पहले हमारा समाज आध्यामिकता और धार्मिकता से संचालित होता था। वो अब राजनीति से संचालित होने लगा है। रोहिणी अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वह अपनी आलोचना में लेखक को दरकिनार कर रचना से संवाद करते हैं और उसके तल में छिपी हुई साधारण से साधारण चीजों को जांच–परखकर ऊपर लाते हैं।

वैयक्तिकता प्रयोगवादी कविता का एक अंगीभूत वैशिष्ट्य है। अतरू एकांत के कथ्य् में ये वैयक्तिवकता और एकांतिकता ज्याएदा हावी दिखती है। पर वैयक्तिककता में सामाजिकता भी अनुस्यूऔत है। अकेला और एकांत दो कविताएं तो यहां हैं ही। जिनमें अकेलेपन और एकांतिकता का बोध प्रबल है। पर अनमनी उदासियों के बिम्बा तो यत्र–तत्र बिखरे मिलेंगे। अकेलेपन का अहसास धूल भरी दोपहरी भी कराती है। अनमनी उदासी का भी। अनजाने चुपचाप कविता में भी वे लिखते हैं।

कविता में ऐसे और शब्द आते हैं। जो अकेलेपन व निर्जनता के भाव को सघन करते हैं जैसे परिमल उन्मन, संध्या एं निर्जन। आगे गहन अँधेरा है मन रुक रुक जाता है एकाकी। अब भी है टूटे प्राणों में किस छवि का आकर्षण बाकी। अपने अंतर का खालीपन तेरे सुधि सौरभ से भर लूँ– एक कविता में ऐसा वे कहते हैं।

एकांत के साथ उदासी का भी जोड़ है। सहकार है। तभी तो आज उचटा सा ह्रदय कह कर वे उस स्ने ह आलोक की अभ्यसर्थना करते हैं। जो अनमने संतप्त प्राणों को सदा भरता रहे। इस क्षण में एकांत कविता उनके मिजाज का परिचायक लगती है। ये अंतर्मुखता ही कवि का वैशिष्ट्यन है। भीड़ में अकस्मोत मुलाकात की ऐसे सलज्ज। अभिव्यमक्तिक दुर्लभ है। अरसे बाद मिलन की जो अचकचाहट मन में होती है वो तो है ही।

वो जैसे एकांत से मिल कर उस अनुभूति तक पहुंच पाता है कि बहुत कुछ कष्टैदायक के बावजूद जीवन में बहुत कुछ अच्छा भी है। जिसकी अनन्यद अनुभूति तोष देती है। वह किसी की अम्ल्ान मैत्री के संदेश से परितृप्त हो उठा है। तमाम झंझावातों के बीच ये अम्लाान मैत्री, ये अनन्यत अनुभूति, प्यार के उलझे हुए धागों

को धीरज और ममता से संवारने का ये जो अहसास है जो कि कवि को अपूर्व शांति से भरता है और इस सब की औचक अनुभूति तब होती है। जब वो भीड़ में भी उस एकांत से मिलता है जो पहले भी और आज भी दुर्लभ है। कभी कभी लगता है ये एकांतिकता जो छायावादी कवियों के मिजाज की भी एक बानगी रही है वो नेमि जी के मिजाज में भी है। वे छायावादोत्त र काव्यव वैशिष्ट्य का बहुत कुछ अपने काव्यो में, कविता काया में धारण करते हैं।

कवि चाहे प्रकृति के बखान में तल्ली न हो, वो यात्रा में हो, वो जीवन के किसी क्रिया व्यृापार में संलग्न हो। वो एक एकांत को इस भावबोध को विसर्जित नहीं कर पाता। इसीलिए प्रकृति के उपादान भी कवि के एकांत का भी स्वातगत करते हैं। स्वा्गत के लिए प्रस्तुएत रहते हैं। उनके भीतर एक अव्यक्त उदासी है जिसे वे कभी चीड़ के पेड़ से साझा करते हैं। उसे अपने मरुथल मन की कहानी कहते हैं। तो कभी जिन्दकगी की बेसुरी बांसुरी से उमगते सुरों में पहली सी तड़प का तापमान न पाकर विकल हो उठते हैं।———जिन्दसगी की बांसुरी मेंअब नही हैवो उमड़ती तड़प पहली।अजब है मन जो बुझा है और रीता है मगर बेचौन है। बेसुरा, पृष्ठ 97।

वे यत्र–तत्र अपने एकांत को तलाशते हैं। शायद वहीं उनकी विश्रांति का एक दुनिर्वार ठीहा हो। वे ये महसूस करते हैंरू

आज शायद मैं अलभ एकांत अपना पा गया हूं। राजपथ से भटक फिर परिचित डगर पर आ गया हूं।यबहरहाल, ये एकांतिकता, ये अकेलापन, ये अंतर का खालीपन नेमि जी के काव्य की एक कुंजी है जिससे होकर इस अंतर्मुख कवि के मिजाज को समझा जा सकता है। वे स्वहयं अपने कवि–रहस्ये से इस तरह पर्दा उठाते हैं।

ये एकांत अभेद अंधेरे सा मन पर घिरता आता है।जी का सब विश्वारस अचानक ही मानो गिरता जाता है।घोर विवशता के मरु में ये भटक पड़े हैं प्राण अकेले।आज नहीं कोई जो मेरे मन की ये दुर्बलता झेले। अपने अंतर का खालीपन,पृष्ठ 19पर इसके बावजूद, नेमिचंद्र जैन की वैयक्ति कता सामाजिकता की हामी है। उनकी वैयक्तिबकता सामाजिकता से असंपृक्त् नहीं है। ये व्यजक्ति की स्वठतंत्रता और स्वाबधीनता के बोध की हिमायती है। तो सामाजिक उत्तहरदायित्वोंव से अपने व्यवक्तिरत्वा को जोड़ने की भी।

प्रतिरोध का स्वकरहम न सुनेंगे आज तुम्हातरे गीतघृणा के नए पुराने ठेकेदारोगीत तुम्हातरे हम न सुनेंगे।एकांतिकता वैयक्तिकता के कोमल पलों के साथ उनकी कविता युगीन सत्य को पहचानती है।

उसके अंतकरण में स्वा र्थपरताओं, क्षुद्रताओं, पाखंड, नरमेध और युद्ध चाहने वाली युयुत्सा और आजादी को कुचलने वाली ताकतों के विरुद्ध प्रतिरोध का ऐलान करती है।क्षुद्र स्वार्थ के लालच में तुमनेअपने को बेच दिया हैक्रूर आततायीतुम तिल तिल तोड़ रहे होमानव मन की युग युग से संचितपूजित प्रतिमाएं सारीकला सभ्यअता की संस्कृति की।तुमने मजहब डुबो दिया हैगरम रक्ति की बैतरिणी मेंऔर अभी तकप्यास तुम्हालरी बुझी नहीं है।तुम्हें और नरमेध चाहिए। तुम्हें अभी तो युद्ध चाहिए। पृष्ठ 93।

विचार–विमर्श

नेमि जी मजहबी संकीर्णताओं, स्वार्थिपरताओं, घृणा के नियामकों और युद्धोन्मानदी ताकतों का विरोध करते हैं और कहते हैं –––आज तुम्हे गीत घृणा के ठेकेदारों हम न सुनेंगे। अब हम अपनी क्षमता को पहचान गए हैं। अब हम आगे बढ़ कर खुद अपने हाथो। अपना भविष्यह निर्माण करेंगे। वही,पृष्ठ 95।पीड़ित मानवता का पक्षकवि का पक्ष तो पीड़ित मानवता का पक्ष होता है। तुलसी यदि अपने समय के बड़े कवि हुए तो केवल इस नाते नहीं कि उन्होंने धीरोदात्तर राम और उनके आदर्शो का बखान किया। तुलसी ने एक बड़ी प्रतिमा की छाया में समाज के आचार विचार, उसकी मर्यादाओं, लोकमानस, उसकी प्रवृत्तियों का उन्मेरष करते हैं। नेमि जी तुलसी पर कविता लिखते हुए यह पाते हैं कि कवि का दाय बहुत अधिक है समाज के लिए। पर अभी भी नर नारी दुखी हैं, अयोध्याह विकल है, राम वनवासी हैं, अगणित राम–––जिसे हमें राम रामौ रामा की बहुवचनीयता में देख सकते हैं।

सीता बंदिनी है, कुटिल राक्षसों की स्वेर्णलंका अभी ध्ववस्ती नहीं हुई– सदियों पहले तुलसी ने जो लोक का, समाज का, राजा–प्रजा का जो मानक सामने रखा उसके आलोक में नेमि जी कवि के उच्चा,दर्शों का आवाहन करते हैं। मानस के कवि को संबोधित करते हुए वे ये आशा जताते हैं कि कवि फिर तुम्हाारे रथचक्र की लीकों पर चल कर ही होगा निर्माण। नये युग के नये मानस का।नेमि जी के हृदय में शहरी गरीबों के लिए, गंवई किसानों के लिए पीड़ा है। नींद नहीं आती है कि वजह कोई निजी नहीं, वो परदुखकातरता की ही उपज है। आज फिर नींद नहीं आती है। ये उस गरीबी का आलम है जो एक तरफ औपनिवेशिक दासता की उपज है।

गोली का शिकार हुए मिल मजदूर के बच्चौं की दुरवस्था की कहानी है तो दूसरी तरफ दैवी आपदा और बाढ से तबाह उजाड़ हुए एक गांव के एक बूढे किसान की कहानी है। जिसका खेत छिन गया है। अकाल में घरवाली नहीं रही। बेटा जेल में बंद हुआ क्योंवकि वो हक के लिए लड़ता था। –एक कराह और आह से गुजरता हुआ उसका जीवन–उसे नींद नहीं आती है और इधर कवि– उसे भी नींद नहीं आती है।

दुखिया दास कबीर है जागै अरु रोवै। पर वो भी वो सुबह कभी तो आएगी। रात बीतने को है। इसी आशा में कवि है। ये परदुख कातरता नेमि जी में कूट कूट कर भरी है। प्रकृति प्रेमी कविनेमि जी के काव्यै में प्रकृति के प्रति प्रेम की निर्झरिणी बहती है। वे निर्झर को संबोधित करते है बहते जाने के उत्सा ह को निरंतर बनाए रखने के लिए। वे शिखर को पर्वत को संबोधित करते हैं, उसकी महनीयता को आवाहित करते हैं। वे चांदनी रात का वैभव निहारते हैं।

किसी कवि ने कहा है रू आजकल तमाम रात च□दनी जगाती है। कवि चांदनी रात के समर्पित एकांत में जग रहा है। जैसे वह चुपचाप अनायास कवि की गोद में सो जाती है। चांदनी गिरिजा कुमार माथुर के यहां भी गृहिणी की तरह आती हैरू पड़ रही आंन तिरीछी चांदनी?ध गंध चौके भरे मैले वसनध गृहिणी चांदनी चांदनी की रात। पर जहां वे चांदनी की चंचलता के बिम्बा उकेरते हैं, उन्हेंह शरद की रात चांदनी के मधुर सौरभ से लदी भारावनत लगती है और कवि मन भी विभा के गीत के सस्मि त स्वचरों के नशे में डूब जाना चाहता है, वहीं वे दशमी के पीताभ रुग्णआ चांद का थका थका निस्तेमज मुख निहार कर उदास भी होते हैं।

उसे देख उन्हेंभ लगता है, लगता है यक्ष्माह से पीड़ित निस्तेमज मुख कोई मुझे घूरता है अपलक निस्पंहद।याद रहे कि चांद को लेकर जैसा उत्सातह नेमि जी के यहां है, उतनी ही कारुणिकता भी। दशमी का चांद के पीछे की विकलता के पीछे कहीं मुक्तिमबोध का चांद का मुँह टेढ़ा है कि यथार्थवादी अभिव्येंजना तो नहीं जो चांद के साथ हमारे छायावादी अवकल्पहन को ध्वथस्तभ करता हुआ यथार्थ के कठोर रुग्णत चांद का अहसास कराता हो!हमारी पूरी काव्यवसंरचना प्रकृति के उपहार से संवलित है।

कवि का मन तो वैसे ही बादलों और हवाओं सा चपल चंचल होता ही है ऊपर से आकाश में बादल घिरे हों जीवन को, धरा को अपने सरस अभिषेक से सींचने वाले तो कवि का उत्तदप्ती मन भी रस प्राण से भर उठता है। उनके समकालीनों में गिरिजा कुमार माथुर ने सबसे ज्यीदा अपने काव्यण में प्रकृति को दुलराया है। फिर उमड़े मेघ कह कर उन्हों ने भी मेघों की चंचलता का चित्रण किया है। पर वे अंततरू मांसल हो उठते हैं। मेघ के साथ उनका प्यामर, हरसिंगार झरने लगता है। पर नेमि जी की कविता फिर घिरे बादल में उस पूरी संजीदा उमड़–घुमड़ का वृत्तां त समाहित है जिसमें कवियों के प्राण बसते हैं–फिर घिरे सहसा गगन में आज बादल हैंबरस पड़ने को असंयत प्राण चंचल हैं।

जैसा कि मैंने कहा है नेमि जी तमाम एकांतिक अहसासों के बावजूद आशा और विश्वासि के कवि हैं। बादल हैं तो अभिलाषा है। बादल हैं तो प्यासि की तृप्तु की आस है। वे खुद तो करते ही हैं, कवि जगत से भी

इस उन्मेऔष का स्वा गत करने को कहते हैं। देखिए ––धुलेगा जल एक नव उम्ने ष के जल सेप्राण जागेंगे नए विश्वा स के बल से।कवि, करोगे क्या् न इस उन्मे ष का वंदननये शुभ उल्लास से अभिभूत अभिनंदन फिर घिरे बादल, पृष्ठ 62कवियों ने जितना ऋतुराज बसंत पर लिखा है उतना रम कर अन्यस ऋतुओं पर नहीं। चौत पर तो बहुत ही कम लिखा गया है।

चौत की संझ पर नेमि जी ने लिखा है। चौत की सांझ किसी की याद दिला रही है। मौसमों का हमारे मन से कितना गहरा रिश्ताह है। ये कोई चौत की उन्महन दोपहरी ही रही होगी जब केदारनाथ सिंह सरीखे कवि का मन उदास हुआ होगा और ये गीत रच गया होगा– गिरने लगे नीम के पत्तेउ झरने लगी उदासी मन की। नेमि जी को भी लगता है–चौत की यह सांझ फीके पड़ रहे हैं रंगहै तुम्हालरी याद घिर आयी तिमिर के संग।अज्ञेय लिखते है, वह गाता है अनघ सनातनजयी हो न हो अज्ञेय की इस प्रतिश्रुति को नेमि जी ने मान देकर ही कवि गाता है जैसी अलबेली कविता लिखी हो। ये कवि की महिमा और उसके वास्त विक कार्यभार का गान भी है।

निष्कर्ष

नेमिचंद्र जैन की कविताओं का संसार एक उद्विग्न् कवि की कविताओं का संसार है। वो न कल्पओनाओं को बरजने का हामी है न संसार के यथार्थ बोध को नकारने का। जीवन की वास्तोवता का बोध उसके यहां बखूबी है। जिसे हम कवि के काव्य। में उत्तसर छायावादी वैशिष्ट्यय के रूप में देखते हैं। वो वास्त व में उसी के शब्दों में संक्रांति के रंगों का समावेशन है। संस्कायर और विवेक की कश्मतकश है।

उनके यहां सौंदर्य का स्वीकार है, क्योंकि वे स्ववयं स्वीककार करते हैं कि सौंदर्य की अनुभूति जीवन की स्वी कृति का महत्व पूर्ण चिह्न है। जिसमें सौंदर्यबोध क्षीण है। उसे जीवित नहीं कहा जा सकता यही कारण है कि वे रवींद्रनाथ टैगोर के सौंदर्यपूजक व्यिक्ति त्वर या सौंदर्यबोध को आज के प्रगतिशीलों से कहीं अधिक जीवंत व ईमानदार मानते हैं। प्रयोगवादी कविता में जिस वैयक्तिककता को एक काव्यिमूल्यं के रूप में देखा जाता है और जिसे प्रगतिवादी दृष्टि के आलोचक संशय के घेरे में रखते आए हैं। उसके लिए नेमि जी ने तारसप्तवक के अपने वक्तकव्य में साफ–साफ कहा है कि कला की सच्ची प्रगतिशीलता कलाकार के व्यीक्तित्वच की सामाजिकता में है, व्याक्ति हीनता में नहीं।

कविता भी तो मानवमुक्तिय का पर्याय है। कविता की मुक्ति भी अंतत मानव मुक्तिछ में ही है। वे संकोच से कहते हैं, कविता कला पर मेरी इन सारी बातों को मेरी कविता में खोजें ये जरूरी नहीं है क्यों कि संक्रांतिकाल के कवि की कठिनाइयां बहुत हैं।

तथापि अगर कवि अपने मन की बेईमानी को भी ईमानदारी से देख कर दुनिया के आगे रख सके तो वो बहुत है।इस तरह नेमि जी का काव्यद जगत भले ही परिमाण में कम हो किन्तु उनके कवि के अंतरूकरण की विशालता और समावेशिता का सूचक तो है ही। उनका सर्जनात्महक जीवन नाट्यकर्म, रंग समीक्षा, नटरंग के संपादन इत्या दि में लगा रहा पर कविता उनके अंतरूकरण से लगी रही। वो जितना भी लिख सके सहेज सके वो कवि रूप में उनके काव्य की चरितार्थता का प्रमाण है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी काव्य, डॉ. देवराज, कल्पकार प्रकाशन लखनऊ, प्रथम,
2. शब्द– नरेश मेहता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012 14– नई कविता, नंद दुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012 15– अज्ञेय प्रतिनिधि कविताएं एवं जीवन परिचय, विद्यानिवास मिश्र,
3. राजपाल एंड संस, दिल्ली, प्रथम2003 17– विचार और कविता, डॉ. . राजेंद्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम, 2002
4. अज्ञेय कवि कर्म, रमेश चंद्र शाह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम, 2012
5. सर्वेश्वर, मुक्तिबोध डॉ. कृपा शंकर पांडेय, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम, 2006
6. काव्य, सुश्री सुमन झा, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर,ण्– अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या, राम स्वरूप चतुर्वेदी, भारतीय 2012
7. ज्ञान पीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा, 2011
8. असाध्य वीणा की साधना (मूल्यांकन और पाठ), प्रो. वशिष्ठ अनूप विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय, 2011

9- रचनावली – (1), कृष्णदत्त पालीवाल, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम, 2011